

कोवडि-19 के कारण लैंगिक समानता को खतरा: यूनेस्को अध्ययन

प्रलिस के लयः

यूनेस्को, अंतरराष्ट्रीय बालका दविस, 'नो-टेक' और 'लो-टेक' रमोट लर्नगि

मेन्स के लयः

कोवडि-19 के कारण स्कूल बंद होने के लैंगिक प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [यूनेस्को](#) ने 'वहेन स्कूलस शट' नामक एक नया अध्ययन जारी कया, जसमें सीखने, स्वास्थय और कल्याण पर कोवडि-19 के कारण स्कूल बंद होने के लैंगिक प्रभाव को उजागर कया गया है।

इसे वर्ष 2021 में अंतरराष्ट्रीय बालका दविस (11 अक्टूबर) के अवसर पर जारी कया गया था।

अंतरराष्ट्रीय बालका दविसः

इतहासः

- वर्ष 1995 में बीजगि में आयोजति महिलाओं पर वैश्वक सम्मेलन में युवा और कमज़ोर लड़कयों पर केंद्रति एक कार्यक्रम की आवश्यकता की पहचान की गई थी।
- यह पहल युवा महिलाओं के सामने आने वाली चुनौती का समाधान करने के लयि एक गैर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय कार्ययोजना के रूप में शुरू हुई।
- 11 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय बालका दविस घोषति करने का एक प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा वर्ष 2011 में अपनाया गया था।
- वर्ष 2020 में इसने बीजगि घोषणापत्र को अपनाने के 25 साल पूरे कर लयि।

लक्ष्यः

- यह दुनया भर में युवा लड़कयों की आवाज़ को सशक्त बनाने और बढ़ाने के लयि मनाया जाता है।

2021 की थीमः

- 'डजिटल जनरेशन', हमारी जनरेशन'।

प्रमुख बदि

अध्ययन के बारे मेंः

- 'वहेन स्कूलस शट': कोवडि-19 के कारण स्कूल बंद होने के लैंगिक प्रभाव" शीर्षक वाले वैश्वक अध्ययन से पता चलता है कइसने लड़कयों और लड़कों, युवा महिलाओं व पुरुषों को स्कूल बंद होने की वजह से अलग तरह से प्रभावति कया था।
- कोवडि-19 महामारी के चरम समय पर 190 देशों में 1.6 बलियिन छात्र स्कूल बंद होने से प्रभावति हुए थे।

लैंगिक प्रभाव के कषेत्रः

घरेलू मांगः

- गरीब परिवारों के संदर्भों में लड़कयों के सीखने का समय घर के बढ़ते कामों के कारण बाधति होता था। सीखने में लड़कों की भागीदारी आय-सृजन गतविधियों तक सीमति थी।

डजिटल डवाइडः

- इंटरनेट-सकषम उपकरणों तक सीमति पहुँच, डजिटल कौशल की कमी और तकनीकी उपकरणों के उपयोग को प्रतबिधति करने वाले सांस्कृतिक मानदंडों के कारण लड़कयों को कई संदर्भों में डजिटल दूरस्थ आधार पर सीखने के तौर-तरीकों में संलग्न होने में कठनाइयों का सामना करना पड़ा।

○ अध्ययन में कहा गया है क'डजिटल लैंगिक वभाजन' कोवडि-19 संकट से पहले से ही एक चति का वषिय था।

स्कूल वापसी की दरः

- स्कूल वापसी दरों के बारे में आज तक उपलब्ध सीमिति आँकड़े भी लैंगिक असमानताओं को दर्शाते हैं।
 - केन्या में चार काउंटियों में किये गए एक अध्ययन में पाया गया कि 16% लड़कियाँ और 15 से 19 वर्ष की आयु के 8% लड़के वर्ष 2021 की शुरुआत में स्कूल फरि से खुलने के बाद के दो महीनों के दौरान नामांकन करने में वफिल रहे।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:**
 - स्कूल बंद होने से बच्चों के स्वास्थ्य पर असर पड़ा है, खासकर उनके मानसिक स्वास्थ्य, भलाई और सुरक्षा पर।
 - दुनिया भर के 15 देशों में लड़कियों ने लड़कों की तुलना में अधिक तनाव, चिंता और अवसाद की सूचना दी। LGBTQ शक्तिधारथियों ने उच्च स्तर के अलगाव और चिंता की सूचना दी।
- **सफिरारशिन:**
 - **नीतियों और कार्यक्रमों में कारक लगी:**
 - इस अध्ययन में शिक्षा समुदाय से आहवान कया गया है कि वे कमजोर और संवेदनशील समुदायों की घटती भागीदारी और स्कूल में वापसी की कम दरों से निपटने के लिये नीतियों व कार्यक्रमों में लगी कारक को शामिल करें, जसिमें नकद हस्तांतरण तथा गर्भवती लड़कियों और कशोर उमर की माताओं को वशिषिट सहायता शामिल है।
 - **ट्रेंड को ट्रैक करना और नीतगित हस्तक्षेपों का वसितार:**
 - बाल वविह के साथ-साथ जबरन वविह को समाप्त करने के लिये रुझानों को ट्रैक करने एवं नीतगित हस्तक्षेपों का वसितार करने हेतु नरितर प्रयासों की आवश्यकता है तथा ऐसी प्रथाएँ जो लड़कियों की शिक्षा और स्वास्थ्य के अधिकार को प्रभावति करती हैं तथा उनकी दीर्घकालिक संभावनाओं को कम करती हैं, को जल्द-से-जल्द समाप्त कये जाने की आवश्यकता है।
 - **'नो-टेक' और 'लो-टेक' रमिोट लरनगि सॉल्यूशंस:**
 - 'नो-टेक' और 'लो-टेक' रमिोट लरनगि सॉल्यूशंस, स्कूलों को व्यापक मनोसामाजकि सहायता प्रदान करने हेतु उपायों के साथ-साथ डेटा के माध्यम से भागीदारी की नगिरानी करने हेतु आवश्यक है।

स्रोत: द हद्रि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/threat-to-gender-equality-due-to-covid-19-unesco-study>

